- एपिसोड 42 -

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (कृत्रिम बुद्धिमता) और सार्वजनिक क्षेत्र में इसका इस्तेमाल

लोगों के लिए, लोगों के द्वारा!

लेखक - हेमंत लगवंकर
अनुवादक - नेहा त्रिपाठी
अवधारणा और समन्वय: डॉ बी के त्यागी

सार्वजनिक क्षेत्र में डिजिटल परिवर्तन अब एक ज़रूरत बन गया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और इससे जुड़ी तकनीकों में राजस्व और वित्त एजेंसियों से जुड़ी कई समस्याओं को हल करने की क्षमता है... ये सार्वजनिक वित्त प्रबंधन प्रणाली और कर प्रशासन को अधिक कुशल बनाने में अहम भूमिका निभाते हैं। एआई का इस्तेमाल भ्रष्टाचार का पता लगाने और धोखाधड़ी करने वालों को पकड़ने के लिए भी किया जा सकता है। एआई-सक्षम प्रौद्योगिकियां कई बातों की स्पष्ट तस्वीर भी पेश करती हैं... जैसे, पैसा कहां खर्च किया जा रहा है, कहां माल ले जाया जा रहा है और लेन-देन कैसे किया जा रहा है।

हालाँकि, डिजिटल परिवर्तन केवल नई तकनीकों के बारे में नहीं है, बल्कि इसके लिए संगठनात्मक संरचनाओं, प्रशासन, कार्य प्रक्रियाओं, संस्कृति और सोच की ज़रूरत होती है।

इस एपिसोड में बताया गया है कि एआई तकनीक सार्वजनिक क्षेत्र में होने वाले कामों को बेहतर बनाने में कैसे मदद करती है और इसे सफल बनाने में जनता की क्या भूमिका हो सकती है।

किरदार :
नंदिनी: एक गृहिणी (उम्र लगभग 45 वर्ष)
शेखर: नंदिनी के पति (उम्र लगभग 50 वर्ष)
श्रेयस: नंदिनी और शेखर के बेटे (उम्र लगभग 18 वर्ष)
डीपी: गैस सिलेंडर वितरण व्यक्ति के लिए संक्षिप्त रूप (उम्र लगभग 35 वर्ष)

(एक व्यक्ति जो गैस सिलिंडर वितरित करता है, टेम्पो को सिलेंडर से लोड और अनलोड कर रहा है। सिलेंडर के लोडिंग और अनलोडिंग की आवाजें सुनाई देती हैं। नंदिनी इसे अपने घर से देख रही है और वो उस व्यक्ति को बुला रही है।)

नंदिनी: हैलो…। ओ, बाबू…।

DP: जी, बहन जी!

नंदिनी: क्या मुझे सिलेंडर मिल सकता है?

DP: बहन जी, आपका नंबर क्या है?

नंदिनी: कौन सा नंबर?

डीपी: रुकिए, मैं वहीं आ रहा हूँ… (टेम्पो में खाली सिलेंडर रखने की आवाज)

नंदिनी: ठीक है!

डीपी: हां, बहन जी... कहिये!

नंदिनी: क्या आपके पास एक सिलेंडर ज़्यादा है?

डीपी: ज़्यादा सिलेंडर… मतलब ?

नंदिनी: हाँ! दरअसल मैंने सिलेंडर के लिए ऑर्डर नहीं दिया है।

डीपी: तो, बहन जी, मैं आपको बिना ऑर्डर के सिलेंडर कैसे दे सकता हूँ?

नंदिनी: अरे भई, गैस सिलेंडर पूरी तरह से लेने से पहले मैं हमेशा ऑर्डर देती हूं। लेकिन इस बार, मैं भूल गई और अब सिलेंडर खत्म हो गया है…

डीपी: तो आप सिलेंडर बुक कर लीजिए…

नंदिनी: हाँ, मैं ऐसा करूंगी, लेकिन बुक करने के बाद सिलेंडर मिलने में कुछ दिन लगेंगे…

डीपी: हाँ! कम से कम 4 से 5 दिन तो लगेंगे… बहुत से लोग सिलेंडर का इंतजार कर रहे हैं…

नंदिनी: हम्म… हम 4 - 5 दिनों तक इंतजार कैसे कर सकते हैं?

डीपी: तो?

नंदिनी: अगर मैं आपको सौ रुपये ज्यादा दूं, तो क्या मुझे सिलेंडर मिल सकता है?

डीपी: नहीं… ऐसा नहीं हो सकता है……

नंदिनी: तुम ऐसा क्यों बोल रहे हो? तुम्हें मेरी बात समझ नहीं आ रही है। मैं कह रही हूँ कि मैं तुम्हें सौ रुपये ज़्यादा दूंगी… अब तो मुझे सिलेंडर दे सकते हो और मैं बाद में सिलेंडर बुक भी कर दूँगी…

डीपी: (चिड़चिड़े स्वर में) मैं ऐसा नहीं कर सकता! और मुझे रिश्वत देने की कोशिश मत कीजिए…

नंदिनी: मैं रिश्वत नहीं दे रही हूँ!

डीपी: (गुस्से में जोर से) फिर और क्या कर रही हैं आप? आपको क्या लगता है, आप अपने पास मौजूद पैसे से कुछ भी कर सकती हैं?

नंदिनी: (जोर से) क्या तुम मुझ पर आरोप लगा रहे हो?

डीपी: मेरी नौकरी चली जाएगी… मैं आपसे ऐसे पैसे नहीं ले सकता… अब सब कुछ कंप्यूटर पर दर्ज होता है…

नंदिनी: मुझे पता है, ज़रूरत पड़ने पर कोई भी कंप्यूटर के डेटा में बदलाव कर सकता है… अगर तुम्हें चाहिए तो मैं एक सौ पचास रुपये तक दे सकती हूं।

डीपी: (बुरी तरह से चिढ़कर) क्या आप मजाक कर रही हैं…

(तेज आवाज में बातचीत सुनकर शेखर बाहर आया)

शेखर: क्या हुआ नंदिनी? क्या चल रहा है?

नंदिनी: अरे, कुछ नहीं शेखर…

शेखर: तो फिर इस डिलीवरी वाले पर चिल्ला क्यों रही हो?

डीपी: सर, अपनी पत्नी को समझाइए… मैं आपकी तरह अमीर नहीं हूँ, लेकिन…

शेखर: ठीक है… ठीक है! हम माफ़ी माँगते हैं… आप जाओ अब…

डीपी: माफ़ी बस एक शब्द है जो आपको अपनी गलतियों को कवर करने में मदद करता है… किसी और के साथ इस तरह की गलती न दोहराएं…

*(*डिलीवरी पर्सन चला गया। दरवाजा बंद होने की आवाज सुनाई दी*)*

शेखर: नंदिनी, मुझे समझ नहीं आ रहा है कि तुम ऐसे लोगों से अनावश्यक बहस क्यों करती रहती हो…

नंदिनी: (गुस्से में) अनावश्यक? आप मेरी समस्याओं को कैसे समझ सकते हैं… आपको समय पर खाना मिल जाता है… लेकिन क्या आपने सोचा है कि मुझे इसके लिए कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है?

शेखर: नंदिनी, मैं समझ सकता हूँ। लेकिन समस्याओं को हल करने का ये तरीका नहीं है!

नंदिनी: ठीक है, फिर आप मेरी समस्या सुलझाओ! घर में गैस सिलेंडर खत्म हो गया है। अब सिलेंडर नहीं मिला तो आज आपको खाना नहीं मिलेगा!

शेखर: ये क्या बात हुई नंदिनी… ये विशुद्ध रूप से तुम्हारी लापरवाही है और तुम उस गरीब के साथ बहस कर रही हो…

नंदिनी: बहस कर रही हो? मैंने उसे गैस सिलेंडर की क़ीमत से एक सौ पचास रुपए ज़्यादा देने की बात कही…

शेखर: इसे ही 'रिश्वत' कहते हैं नंदिनी...

नंदिनी: अब तुम उसका पक्ष ले रहे हो...

शेखर: नंदिनी, ये किसी का पक्ष लेने का सवाल नहीं है। ये एक तरह का भ्रष्टाचार है... और मैं भ्रष्टाचार का पक्ष नहीं ले सकता...

(इस समय, श्रेयस अंदर के कमरे से आता है)

श्रेयस: भ्रष्टाचार? हमारे घर में!

नंदिनी: श्रेयस, तुम्हारे पापा तो संत आदमी हैं... मैं सिर्फ सिलेंडर के लिए पूछ रही थी...

शेखर: नंदिनी, आधी बात मत बताओ... और अपने किए पर पर्दा भी मत डालो... तुम ये भी अच्छी तरह से जानती हो कि तुम जो भी कर रही थी वो गलत था...

नंदिनी: शेखर, अपने शब्द मेरे मुँह में मत डालो...

श्रेयस: मॉम, डैड...। क्या आप मुझे बताएंगे कि आख़िर बात क्या है?

शेखर: श्रेयस, तुम्हारी माँ रिश्वत देकर गैस सिलेंडर लेने की कोशिश कर रही थी...

नंदिनी: रिश्वत?

शेखर: हाँ! हम इसे 'रिश्वत' ही कहते हैं...

श्रेयस: माँ?

नंदिनी: हम्म... मुझे पता है, तुम भी अपने पापा का ही पक्ष लोगे... अगर मैं किसी को कुछ पैसे देती हूं तो वो 'रिश्वत' है और जो तथाकथित उच्च वर्ग के लोग हैं, अगर वो किसी चीज़ की पेशकश करते हैं तो वो 'सराहना का उपहार' है...

श्रेयस: मॉम, मुझे लगता है कि आप बात को बदल रही हैं…

शेखर: बिल्कुल…

श्रेयस: माँ… मेरी राय में वो व्यक्ति… जो सिलेंडर पहुँचा रहा था, सौ प्रतिशत सही था…

नंदिनी: इसका मतलब है, मैं गलत हूँ!

श्रेयस: हाँ! सौ प्रतिशत गलती आपकी ही है… *(हंसते हुए)*

नंदिनी: हम्म… बस कुछ देर रुकिए। जब आप दोनों को भूख लगी, तब मैं आपको बताऊंगी कि कौन सही है और कौन गलत…।

शेखर: नंदिनी, समझने की कोशिश करो… दुनिया बदल रही है… और हमें भी बदलना होगा… नहीं तो, हम पुराने हो जाएंगे…

श्रेयस: मॉम, वो व्यक्ति सही कह रहा था… अब हमें इन सभी कुप्रथाओं को छोड़ना होगा…

शेखर: बिल्कुल सही बात… इस तरह की ग़लतियाँ शुरू में छोटी दिखाई देती हैं… लेकिन धीरे-धीरे वो बड़ी और बड़ी हो जाती हैं… कभी-कभी जीवन से भी बड़ी हो जाती है…

श्रेयस: इसलिए सरकार अब इस तरह की गतिविधियों पर रोक लगाने की कोशिश कर रही है…

नंदिनी: वो कैसे? आप मेरा मुंह बंद कर सकते हैं, लेकिन एक सौ पैंतीस करोड़ आबादी वाले पूरे देश में आप इस तरह की गतिविधियों को कैसे रोक सकते हैं ?

श्रेयस: प्रौद्योगिकी…। प्रौद्योगिकी के माध्यम से माँ! आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग करके हर स्तर पर इस तरह के भ्रष्टाचार को ट्रैक करना और उनसे बचना मुमकिन है।

नंदिनी: कृत्रिम बुद्धिमत्ता ?

श्रेयस: हाँ, माँ…

नंदिनी: क्या ये संभव है? और अगर है तो कैसे?

श्रेयस: माँ, अब ये संभव है… मैं आपको एक उदाहरण देकर समझाता हूं।

नंदिनी: कौन सा उदाहरण ?

श्रेयस: मॉम, हर बार जब आप अपने स्मार्टफ़ोन पर टाइप करते हैं, तो स्मार्टफ़ोन जान लेता है कि आप आगे क्या टाइप करने वाली हो… ये काम वो करता है आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी कृत्रिम बुद्धिमत्ता की मदद से… जो वो आपके पिछले टाइप किए गए वाक्यों से सीख रहा है।

नंदिनी: हाँ!

श्रेयस: इतना ही नहीं माँ, सिस्टम भी अपनी क्षमताओं में सुधार करता रहता है।

शेखर: बिल्कुल… आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी कृत्रिम बुद्धिमत्ता अब हमारे हाथ में है! हम इसका इस्तेमाल लगातार कर रहे हैं!

श्रेयस: तभी तो अब सब कुछ संभव है… बल्कि मैं कह सकता हूँ, कुछ भी असंभव नहीं है! माँ, वो दिन बहुत दूर नहीं हैं जब हमारे देश में एक किसान का स्मार्टफोन न केवल मौसम के पूर्वानुमानों को ट्रैक करेगा, बल्कि शायद मौसम का रुख बदलने पर किसान को उसके अगले कदम के बारे में सलाह भी देगा… इससे भी एक क़दम आगे जाकर ये किसान को अपनी उपज के लिए सबसे अच्छी कीमत तय करने में भी मदद कर सकता है… एक स्मार्ट फिशिंग ऐप अपने पिछले अनुभवों की मदद से मछुआरों को मछलियां पकड़ने में सही दिशानिर्देश दे सकता है… जिससे मछुआरे और ज़्यादा मछलियाँ पकड़ सकें… इसी तरह शिक्षा से जुड़ा एक समझदार ऐप हमारे छात्रों को उनके पिछले रिकॉर्ड और क्षमताओं को ट्रैक करके प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए बेहतर तैयारी में मदद कर सकता है…

नंदिनी: ओह्ह…।

श्रेयस: ये सूची अंतहीन है, माँ!

शेखर: लेकिन नंदिनी, ये याद रखना कि ये उन लोगों के लिए आँखें खोलने वाला कदम होगा, जो विशेष रूप से उन कामों में शामिल हैं, जो देश के भाग्य का फैसला करते हैं।

नंदिनी: मतलब?

शेखर: इसका मतलब है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता अब सार्वजनिक क्षेत्र में अहम भूमिका निभाएगी। जैसे कर संग्रह ऐप सरकार को कर चोरी के तरीकों का पता लगाने में मदद करेगा, जबकि एक सब्सिडी ऐप उन लोगों को बेहतर लाभ पहुंचाएगा, जिन्हें इसकी ज़रूरत होगी... और देश के लोगों को सबसे अच्छी सुविधाएँ और रास्ते आने वाला समय ही दिखाएगा...

श्रेयस: कृत्रिम बुद्धिमत्ता में हाल में जिस तरह की प्रगति हुई है, उसे देखते हुए ये तो तय है कि अगले दशक तक ये हमारे जीवन में और ज़्यादा शामिल हो जाएगा।

शेखर: श्रेयस, दूसरे देशों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का इस्तेमाल अब भुगतान करने के साथ-साथ सब्सिडी और कल्याणकारी भुगतान में हो रहे हेरफेर को दुरुस्त करने के लिए किया जा रहा है। इन कामों में तेजी लाने और इसे ज़्यादा प्रभावी बनाने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता का इस्तेमाल किया जाता है। कल्याण के कामों में बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार को ट्रैक करने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता एल्गोरिद्म की टेस्टिंग भी की जा रही है।

नंदिनी: लेकिन क्या ये हमारे देश में भी होगा?

श्रेयस: क्यों नहीं?

शेखर: नंदिनी, हमने इसे 'मेक इन इंडिया', 'स्किल इंडिया' और, 'डिजिटल इंडिया' जैसी पहल के साथ शुरू किया है। ये सब कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में हुई प्रगति से प्रभावित हैं... इस पर भारतीय नीति निर्माताओं के लिए तात्कालिक और दीर्घकालिक दोनों तरह की नज़र रखना ज़रूरी हो जाएगा।

श्रेयस: पिताजी, हमारी सरकार ई-गवर्नेंस पर भी कड़ी मेहनत कर रही है, है ना?

शेखर: हाँ! केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड यानी "सीबीडीटी" ने हाल ही में ऑनलाइन टैक्स रिटर्न के आंकलन के लिए तकनीक में बदलाव किया है। कर विभाग की ई-मूल्यांकन योजना 2019 कृत्रिम प्रौद्योगिकी की मदद से चलाई जाने वाली योजना है... सरकार ने अब कई-चरणों में किए जाने वाले मैन्युअल मूल्यांकन के बजाय ई-रिटर्न की सुविधा शुरू की है।

श्रेयस: ये तो बहुत बढ़िया है...

शेखर: ई-मूल्यांकन प्रक्रिया पूरी तरह से तकनीकी होगी जिसमें डेटा एनालिटिक्स, मशीन लर्निंग, और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग और कर नियमों के गलत उपयोग या चोरी को पकड़ने के लिए सभी कॉम्पैक्ट उपकरण होंगे।

नंदिनी: मुझे वो नहीं मिल रहा है जिसकी तुम बात कर रहे हो। इन सभी तकनीकी शब्दों का उपयोग किए बिना, मुझे सरल भाषा में समझाओ...

शेखर: ठीक है! *(हंसते हुए)*

श्रेयस: मॉम, मैं आपको समझाता हूं। डैड कह रहे हैं कि, इस ई-मूल्यांकन प्रणाली की मदद से कर का भुगतान करने वाले व्यक्ति को किसी भी काम के लिए दफ़्तरों के चक्कर लगाने की ज़रूरत नहीं होगी। करदाता को पोर्टल के माध्यम से एक नोटिस जारी किया जाएगा जिसे वो अपने मोबाइल ऐप के ज़रिए भी देख सकेगा... ऐप या पोर्टल समय-समय पर इस केस को अपडेट करते रहेंगे... जैसे ये बता देंगे कि नोटिस पर प्रतिक्रिया दी गई है या नहीं... या आगे की कार्रवाई हुई है या नहीं...

नंदिनी: ठीक है! मै समझ गई। सरकार को कर में धोखाधड़ी का पता लगाने के लिए भी इस तकनीक का उपयोग करना चाहिए।

शेखर: हां, बिल्कुल नंदिनी। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का इस्तेमाल, कर धोखाधड़ी का पता लगाने, सब्सिडी में हेरफेर को रोकने और लाभार्थियों को ढूँढने के

लिए किया जाएगा। इसके लिए पहला कदम डेटा संग्रह और विश्लेषण है। इंसान के लिए हजारों पन्नों के इस डेटा का विश्लेषण करना और वो भी किसी गलती के बिना, नामुमकिन होगा। क्योंकि कर एजेंसियों के लिए करदाताओं के बारे में जानकारी इकट्ठा करना मुश्किल होता है।

नंदिनी: लेकिन, ये कैसे संभव है ?

श्रेयस: कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जुड़ी तकनीक से लोगों को उनके द्वारा दिए गए कर के बदले बेहतर सेवाएं पाने में मदद मिलेगी। ये जोखिम की पहचान करते हैं, कर यानी टैक्स का हिसाब रखते हैं, कर संग्रह की निगरानी करते हैं, टैक्स रिटर्न सत्यापित करते हैं और कर से जुड़े सवालों के जवाब भी देते हैं। लेकिन कृत्रिम बुद्धिमत्ता सक्षम प्रौद्योगिकियां, राजस्व एजेंसियों को डिजिटल प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल करके करदाताओं के साथ अपने संचार को बढ़ाने में मदद कर सकती हैं। इससे नागरिकों को तेज और सुविधाजनक अनुभव मिलेगा।

नंदिनी: हम्मम...।

श्रेयस: माँ, इकट्ठा किए गए डेटा का विश्लेषण करके, हेर-फेर और गलतियों का पता लगाया जा सकता है... और साथ ही कृत्रिम बुद्धि की मदद लेकर सही तरीके से पैसों का इस्तेमाल करना आसान होगा।

शेखर: वो व्यक्ति जो सिलेंडर पहुँचा रहा था, वो यही बात कह रहा था। उसने बताया कि अब कोई भी हेरफेर करना मुमकिन नहीं है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि अब सब कुछ डिजिटल तकनीक से किया जाता है। जैसे गैस सिलेंडर की सब्सिडी सीधे ग्राहकों के बैंक खातों में जमा की जा रही है। इसलिए हर बात पर नजर रखी जा रही है, ख़ास तौर पर जिसमें पैसा शामिल है।

श्रेयस: और कोई क्षेत्र भी हैं जहां सरकार सब्सिडी दे रही है।

शेखर: हाँ, श्रेयस!

नंदिनी: किन क्षेत्रों में सरकार सब्सिडी दे रही है?

शेखर: कुकिंग गैस के अलावा कई सेक्टर हैं जिनमें हमें सब्सिडी वाले उत्पाद मिलते हैं। हमारी सरकार सभी पेट्रोलियम उत्पादों, यानी पेट्रोल, डीजल, सीएनजी, एलपीजी पर सब्सिडी दे रही है... सरकार चावल, गेहूं, अनाज जैसे सब्सिडी वाले खाद्यान्न भी दे रही है...

शेखर: और खाद पर भी!

शेखर: हां, सरकार किसानों को खाद और कीटनाशकों पर सब्सिडी देती है। साथ ही, ग्रामीण क्षेत्रों में सौर ऊर्जा, पंप आदि स्थापित करने के लिए सब्सिडी दी जाती है।

नंदिनी: इसका मतलब है कि सरकार जीवन को ठीक से जीने के लिए ज़रूरी **लगभग सभी क्षेत्रों को शामिल करती है।**

शेखर: हाँ, तुम सही समझी नंदिनी! और इसलिए, इन सभी सब्सिडी को लोगों तक सही तरीक़े से पहुँचाने का इंतज़ाम करना ज़रूरी है।

श्रेयस: ये सचमुच बहुत बड़ा काम है, डैड...

शेखर: हाँ! मौजूदा स्थिति में उर्वरक सब्सिडी सकल घरेलू उत्पाद का 0.8% है। इस सब्सिडी को उर्वरक के आधार पर दो प्रकारों में बांटा गया है। किसान को यूरिया कम कीमत पर दिया जाता है, जबकि एनपीके उर्वरक के लिए पोषक तत्व, नाइट्रोजन, पोटेशियम और फॉस्फेट के आधार पर निर्माताओं को सब्सिडी दी जाती है। सब्सिडी पर बड़े पैमाने पर हो रहे खर्च को देखते हुए, ये जरूरी है कि सब्सिडी लोगों तक पहुँचाने की व्यवस्था अच्छी तरह **से की जाए।**

श्रेयस: इसका मतलब है कि न सिर्फ़ वितरण बल्कि सब्सिडी की गणना भी एक बड़ा काम है, क्योंकि इसमें बहुत सारे पैरामीटर शामिल हैं।

शेखर: हां, बिल्कुल। उर्वरक की ज़रूरत का अनुमान लगाना एक बड़ा काम है जिसमें जलवायु, पर्यावरण, नीति और मूल्य मैट्रिक्स की गणना की ज़रूरत होती है... जिसमें केंद्र और राज्य सरकारों के साथ-साथ उर्वरक निर्माता और आयातक दोनों शामिल होते हैं।

नंदिनी: आपकी चर्चा से मुझे लगा कि तकनीक के बिना ये बिल्कुल भी संभव नहीं है।

शेखर: नहीं, ऐसा नहीं है, नंदिनी... ये सब्सिडी पिछले इतने सालों से दी जा रही है। हालांकि, कई खामियां और लीकेज हैं। अब, प्रौद्योगिकी इन समस्याओं पर काबू पाने और सार्वजनिक धन का प्रभावी ढंग से इस्तेमाल करने में मदद करेगी।

श्रेयस: इस मामले में कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक वरदान की तरह है...

शेखर: हाँ, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित प्रणालियाँ जिला स्तर पर उर्वरकों की ज़रूरत का आंकलन करती है और इसके प्रबंधन में मदद करती हैं। सिस्टम में ज़्यादा दक्षता और सटीकता बनाने के लिए, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित साधनों का इस्तेमाल किया जा सकता है क्योंकि इस पूरी प्रक्रिया में कई कारकों के साथ-साथ कई हितधारकों के मेल की ज़रूरत होती है।

नंदिनी: लेकिन ये तो बहुत ही मुश्किल लग रहा है... इसे अंजाम देना कैसे संभव है?

शेखर: सभी आवश्यक मेट्रिक्स को कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रणालियों में डाला जाता है, जो खाद की ज़रूरत को मासिक और साथ ही जिलेवार तरीक़े से बताता है... जबकि काम करने के घटों को कम करता है और ग्रैन्युलैरिटी और सटीकता को बढ़ाता है। जिलेवार ज़रूरत तय करने के बाद, माल ढुलाई पर मिलने वाली सब्सिडी तय करना भी आसान हो जाता है... जो कि खाद को हर व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए कंपनियों को दी जाती है।

नंदिनी: बहुत बढ़िया...

शेखर: दरअसल, हमारे देश में केंद्र सरकार की लगभग तीस योजनाएँ हैं और राज्य स्तर की असंख्य योजनाएँ हैं। इन योजनाओं की निगरानी और मूल्यांकन खौल तौर पर देश के दूरदराज के इलाक़ों में भू-स्थानिक दृश्य और छवि मान्यता के कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित उपकरणों की मदद से किया जा सकता है।

श्रेयस: हाँ, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित प्रणालियाँ ऐसे बेहतरीन संचालन के लिए सबसे उपयुक्त हैं... जो अलग-अलग तरह के हैं और भौगोलिक और

प्रशासनिक रूप से फैले हुए हैं... सब्सिडी संवितरण और प्रबंधन में नई तकनीक से लाभ उठाया जा सकता है...

शेखर: सार्वजनिक क्षेत्र के ऐसे निर्माण के लिए जो भविष्य के लिए फिट हो, सरकार को खुद को मजबूत करना होगा। डिजिटल परिवर्तन केवल नई तकनीकों के बारे में नहीं है... बल्कि इसके लिए संगठनात्मक संरचनाओं, शासन, कार्य प्रक्रियाओं, संस्कृति और सोच की ज़रूरत होती है। इसका मतलब ये भी है कि ऐसे मॉडल विकसित किए जाए जिनसे सार्वजनिक सेवाओं को बेहतर बनाने में मदद मिले... तभी सरकार डिजिटल परिवर्तन से होने वाले व्यापक लाभों को लोगों और समाज तक पहुँचा सकेगी।

श्रेयस: तो, इसका मतलब है, तकनीक का सफल इस्तेमाल करने के लिए, जनता का सक्रिय समर्थन भी उतना ही ज़रूरी है।

शेखर: हाँ, श्रेयस तुम बिल्कुल सही हो! ये भी अच्छा है कि तुम इस फ्रंटलाइन कैरियर ऑप्शन (विकल्प) के बारे में अच्छी तरह से जानते हो। अब, हमारी सरकार कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) आधारित स्टार्ट-अप और विकास के लिए भी प्रचार कर रही है जो सार्वजनिक सेवा क्षेत्र में मदद कर सकती हैं।

श्रेयस: हाँ, डैड! मैं इन तकनीकों पर नजर रख रहा हूं और मैंने इस क्षेत्र में ही काम करने का फैसला किया है।

नंदिनी: ये तो ठीक है, लेकिन मेरे पास न तो गैस सिलेंडर है और न ही अब लंच तैयार करने के लिए समय ही बचा है। इसलिए आपको अब एक और बात तय करने की जरूरत है।

श्रेयस: कौन सी बात और किस बारे में ?

नंदिनी: लंच के बारे में...

शेखर: कोई बात नहीं, नंदिनी! आज हम restaurant में जाएंगे...

श्रेयस: तो मैं तुरंत तैयार हो जाता हूँ...

नंदिनी: मैं भी तुरंत गैस सिलेंडर का आर्डर दे देती हूँ!

शेखर: बहुत बढ़िया! इस चर्चा से ढेर सारी बातें जानने, समझने और सीखने को मिली…

(सभी हँस पड़ते हैं)

(संगीत का अंश। एपिसोड समाप्त होता है)